Page No.:
Date:

HISTORY (H)
B.A. – III.
PAPER – Vth.
PART – 'B'
HISTORY OF INDIA (1550-1750)
UNIT – 4th.

B. INDIAN Ocean Trade network in 17th century.

17वीं शताब्दी के भारतीय सामुद्रिक व्यापार :-

⇒ भारत के पश्चिम तट के सामुद्रिक व्यापार :-

15वीं शताब्दी के मध्य (1437) के दिल्ली में बहमनी वंश के शासन काल में उत्तर भारत से संपर्क कम हो रहा था बड़ी तादाद में एबी सीनिया और पूर्वी अफ्रीका के अन्य देशों से लोग पश्चिम भारत में आ रहा।

कोंकण के विभिन्न बंदरगाहों के माध्यम से बाहरी देशों से यात्री और सामानों की आवाजाही होती थी। बहमनी साम्राज्य के बसने के लिए अरब, तुर्क और अफ्रीकी से बड़ी संख्या में लोग आते। विदेशों से आनेवाले समानों में बहुमूल्य सामानों के साथ वेश.

कीमती घोड़े भी थे।

मराठी लेखों में सिद्दियों को काले रंग के कारण श्यामल (काला मुख) कहा गया है। पुर्तगाली और अंग्रेजी में मिलने वाले मिलने वाले अन्य दस्तावेजों में सिद्दी, सिदी सिकडी, ऐदी का के का करो कहा गया है।

बीजापुर के सुल्तानों को जजीरा के सिद्दियों को समुद्री डकैती की छोटी-छोटी वारदातों पर निगरानी रखने के लिए समुद्र में गश्त की जिम्मेवारी सौंपी थी। 1636 में बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। शाहजहाँ ने उन्हें चौल, पनवेल, और दांडा राजापुरी के कोंकण उसे सुपुर्द कर दिया।

बादशाह ने इसकी एवज में सिद्दियों के नेता को साम्राज्य के नौसेना प्रमुख या एडमिरल का पद देते हुए सूरत की 30 हजार रुपये की जागीर दी। उन्हें जंजीरा का मुखिया भी घोषित किया। उनके विभिन्न धरों से आमदनी का एक महत्वपूर्ण स्रोत था।

1671 में औरंगजेब ने

सिद्दी कासिम और खैरियत को क्रमशः जंजीरा और दांडा राजापुरी का कमांडर नियुक्त किया। उसने सिद्दी संबल को तीन लाख रुपये साल की जागीर दे आता था। उसे एडमिरल का पद प्रदान किया।

कोंकण तट पर सिद्दियों की ताकत को वस्तुतः 1683 तक कोई चुनौती नहीं दे सका। इस वर्ष मराठा एडमिरल सिधोजी गूजर ने तटवर्ती दो प्रमुख गढ़ों सुवर्ण दुर्ग और विजय-दुर्ग को विजय किया। इसके कुछ काल बाद सिधोजी का निधन हो गया।

सिद्दियों को व्यापार की कुशलता से अधिक नौ सेना की कुशलता के लिए जाना जाता था। अहमदनगर की निजामशाही के दौरान उन्होंने सामुद्रिक वीरता के वे कारनामे दिखाये कि कोंकण तट पर खुद को नौसैनिक शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया।

त्रावनकोर के राजा मार्तंड वर्मा ने 1729 ई० से 1758 तक 29 वर्ष तक अपने शासन में त्रावनकोर राज्य का आश्चर्यजनक विस्तार किया। उन्होंने एक अत्यंत दुर्लभ प्रतिभा थी। जब उनके समय

Page No.:
Date:

खराब चल रहा है तथा था वे दूसरों की तरफ से युद्ध करने के लिए मना लेते थे। 1741 में उन्होंने दक्षिण-पश्चिम भारत के कोलाचेल में उनपर हमला कर उन्हें परास्त कर दिया। यह एक ऐसा झटका था जिससे डच फिर कभी उबर नहीं सके।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur

Scanned with CamScanner